ई –सूचना स्त्रोत के प्रकार एवम् वर्तमान युग में पुस्तकालय में इसकी उपयोगिता

श्रीमती अंजनी सराफ
शोधार्थी, डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगी रोड कोटा, बिलासपुर छत्तीसगढ़
डॉ. सरिता मिश्रा
सह प्राध्यापक, डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगी रोड कोटा, बिलासपुर छत्तीसगढ़

सारांश

यह पेपर ई–सूचना स्त्रोत के विभिन्न पहलुओं पर केंद्रित है । डिजिटल तकनीकी ने इस संग्रहित ज्ञान को उपयोग करना अधिक आसान, शीघ्र अधिग्रहण करने योग्य तथा आरामदायक बना दिया हैं।यह संग्रहित सूचना अनुसंधानकर्ताओ द्वारा आगे के अनुसंधान तथा समाज के बेहतरी और समग्र विकास के लिए इस्तेमाल किया जा सकता हैं।सुदूर क्षेत्रों में इलेक्ट्रॉनिक– सूचना स्त्रोत आसानी से अधिग्रहित किए जा सकते है । ई–सूचना स्रोत भंडारण की समस्या को हल करते है और सूचना के विस्फोट को नियंत्रित करते हैं। आज के युग में निरंतर प्रलेखीय स्त्रोतो को डिजिटल किया जा रहा है । शैक्षणिक समुदाय (community) के लिए इलेक्ट्रॉनिक सूचना स्रोत बहुत अधिक महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं। तकनीकी के विकास (advent) ने पुस्तकालयों को इसके संग्रह में नई चीजे जोड़ने के लिए प्रोत्साहित एवम् योग्य बनाया है । उनमें से सबसे अधिक महत्वपूर्ण ई–सूचना स्त्रोत है। यह पेपर इन ई–सूचना स्त्रोतों का एक अवलोकन प्रस्तुत करता है, तथा इनके कुछ लाभ एवम् हानि और कुछ वेब साइट्स का पता बता रहा है।

की वर्ड्स :– *ई- सूचना स्त्रोत, ई-बुक्स, ई-जर्नल्स, ई–न्यूजपेपर और ई- थीसिस।*

प्रस्तावना :– प्रिंट मीडिया में सूचना के डिजिटलीकरण ने मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में एक नई अवधारणा को जन्म दिया है , इसने सूचना युग की शुरुआत को चिन्नित किया है । एक इलेक्ट्रॉनिक–सूचना स्त्रोत को एक ऐसे स्त्रोत के रूप में परिभाषित किया गया है जिसके लिए कंप्यूटर एक्सेस या किसी इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद की आवश्यकता होती है । यह डेटा का एक संग्रह प्रदान करता है , यह पूर्ण पाठ आधारों, इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं , छवि संग्रह , अन्य मल्टी मीडिया उत्पाद और संख्यात्मक , चित्रमय या समय आधारित, व्यावसायिक रूप से उपलब्ध शीर्षक जिसे विपणन किए जाने के उद्देश्य से प्रकाशित किया गया है, का उल्लेख करता है। जिसे सीडी रोम पर, टेप पर , इंटरनेट के माध्यम से वितरित किया जा सकता हैं। इसके अधिक उपयोगी होने का कारण हेर फेर तथा खोज के लिए अंतर्निहित छमताए तथा सूचना पहुंच प्रदान करना सस्ता है । साथ ही सूचना स्त्रोतों को प्राप्त करने, भंडारण और रख रखाव आदि में बचत और कभी कभी इलेक्ट्रॉनिक रूप ही एक मात्र विकल्प होता है वैज्ञानिक प्रकाशन में विकास और प्रकाशकों की मूल्य निर्धारण नीतियों ने शैक्षणिक पुस्तकालयों के लिए अपने प्रतिबंधित बजट के भीतर धारावाहिकों को खरीदने और प्रबंधित करने में नई चुनौतियों और अवसरों को प्रस्तुत किया है।

21 वी सदी के पुस्तकालय और सूचना सेवाएं तेजी से बदल रही है तेजी से हो रहे इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशन के विकास के कारण पुस्तकालय ना केवल पठन सामग्रियों जैसे मुद्रित पुस्तकों और पत्रिकाओं का अधिग्रहण कर रहा है बल्कि विभिन्न शिक्षण स्त्रोतों की इलेक्ट्रॉनिक रूप में पहुंच की व्यवस्था प्रदान कर रहा है वेब संसाधन और वेब का उपकरण के रूप में उपयोग ने उपयोगकर्ताओं के सीखने के तरीके

Scanned with CamScanner

को बदल दिया है ।उपयोगकर्ता को सूचना और संसाधन प्रदान करने के लिए शुरुआती दौर में वर्ल्ड वाइड वेब का उपयोग मुख्य रूप से पुश टाइप एप्लीकेशन के लिए किया जाता था ।

वेब 2.0 और खुले स्त्रोतों एवं साझा उपयोग अवधारणा के प्रसार ने उपयोगकर्ता जनरेटेड सामग्री और एप्लीकेशन की ओर ध्यान केंद्रित किया है इसने इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों की लोकप्रियता में तेजी से विकास किया है ई सूचना स्त्रोत वैश्विक साहित्य (global literature) के एक महत्वपूर्ण हिस्से पर कब्जा कर रहे है । ये इलेक्ट्रॉनिक रूप में सूचना स्त्रोतो का उल्लेख करते है । विभिन्न प्रकार के ई–सूचना स्त्रोत, ई –बुक्स, ई–जनरल्स, डेटाबेसेस, सीडीएस/डीवीडीएस, ई–कांफ्रेंस प्रोसिडिंग, ई–रिपोर्ट्स, ई–मैप्स, ई–पिक्चर्स/फोटोग्राफ्स , ई–मैनूस्क्रिप्ट, ई–थीसिस, ई–न्यूजपेपर, इंटरनेट/वेबसाइट्स लिस्टसर्वस, न्यूज ग्रुप्स, सब्जेक्ट्स गैटवेस, यूजनेट आदि है ।

ये सीडी रोम / डीवीडी, पर डिलीवर किए जा सकते है । ई–सूचना स्त्रोत पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं को ई–डेटाबेस , ई–पत्रिका / ई–किताबे/ऑडियो/ ई–छवियो, डेटा / जीआईड , डिजिटल लाइब्रेरी प्रोजेक्ट्स , इलेक्ट्रॉनिक प्रदर्शनीय, ई–विषय गाइड, ई–समाचार पत्र , ई– सम्मेलन कार्यवाही आदि को खोजने में मदद करने के लिए एक सेवा है । और विषय की एक सीमा तक वेब खोज उपकरण तक पहुंच प्रदान करता है ।

इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकें उनके आसान पोटेबिलिटी और एक हाथ से आयोजित डिवाइस में एक से अधिक किताब को एक्सेस करने की विशेषता के कारण सहायक होती है । ओपन एक्सेस प्लेटफार्म पर प्रकाशित सामग्री भी उपलब्ध है। इससे गरीबों को भी आवश्यक सूचना मुफ्त में प्राप्त करने में मदद मिलती है तथा यह डिजिटल अंतर को भरने में भी मदद करता है। उन्हें लाइसेंस और सूचना का उपयोग करने के लिए चिंता करने की आवश्यकता नहीं होती है। डॉ.रंगनाथन के पांचवे सूत्र के अनुसार, "पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है।"पुस्तकालय पुस्तकों का भंडार गृह नही है, यह एक ज्ञान का केंद्र है । हर एक पाठक अपनी समस्या के समाधान के इरादे से पुस्तकालय का दौरा करता है । पुस्तकालय को उपयोगकर्ता समुदाय की जरूरतों को पूरा करना चाहिए ।

परिभाषा:-

"ई संसाधन शब्द सभी सूचना उत्पादों का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाता है जो एक पुस्तकालय एक कंप्यूटर नेटवर्क के माध्यम से प्रदान करता है ।"

पुस्तकालय एवं प्रोद्योगिकी शब्दावली के अनुसार

"एक इलेक्ट्रॉनिक संसाधन , सामग्री, डेटा या प्रोग्राम जिसे एक कंप्यूटरीकृत डिवाइस द्वारा हेर फेर के लिए एंकोड किया गया हो इस सामग्री के लिए एक पेरीफेरल जो सीधे एक कंप्यूटराइज्ड डिवाइस से जुड़ा हो की अव्यशक्ता होती है (eg.सीडी–रोम ड्राइव) या एक कंप्यूटर नेटवर्क (जैसे , इंटरनेट) से कनेक्शन। इलेक्ट्रॉनिक संसाधन जिन्हे कंप्यूटर के उपयोग की आव्यशक्ता नही है, इस परिभाषा में शामिल नहीं है । उदाहरण के लिए , संगीत कंपैक्ट डिस्क और वीडियोकोड।"

Scanned with CamScanner

एएसीआर- 2 के अनुसार

साहित्य की समीक्षा :-

* जमाली, निकोलस और हैंटिंगटन (2005) ने कई अध्ययनो से निष्कर्ष प्रस्तुत किए की उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं के उपयोग और उपयोगकर्ताओं का अध्ययन करने के लिए लॉग विश्लेषण का उपयोग किया ,और उन्होंने इस बात पर ध्यान केंद्रित किया कि अंतिम उपयोगकर्ता द्वारा पसंद किया जाने वाला प्रारूप एचटीएमएल प्रारूप के बजाए पीडीएफ प्रारूप है।

* चिसेंगा (2004) ने दस अफ्रीकी सार्वजनिक पुस्तकालय सेवाओं में आई. सी. टी. की उपयोग की समीक्षा की है । समीक्षा में पाया गया ,की हालाकि अधिकांश पुस्तकालयों में इंटरनेट कनेक्टिविटी थी परंतु बहुत कम अपने उपयोगकर्ताओं को वेब आधारित सेवाएँ प्रदान करने में योगदान दे रहे थे। हालांकि अध्ययन, उन पुस्तकालय में इलेक्ट्रॉनिक संसाधन की उपयोगी सुविधा के लिए चार बाधाओं का उल्लेख करता है, अर्थात सुविचारित योजना की कमी, पर्याप्त या भरोसेमंद वित्तीय सहायता की कमी, उपयोगकर्ताओं को सूचना सेवाओ की आपूर्ति करने के लिए इंटरनेट के उपयोग की कमी, उपयोगकर्ताओं के लिए नई सूचना और संचार प्रौद्योगिकी सेवाएँ प्रदान करने में निरंतर तैयारी की कमी।

ई-सूचना स्त्रोतों की आवश्यकता:-

ई-संसाधन पुस्तकलयाध्यक्ष को उपयोक्ता समुदाय को बेहतर सेवा प्रदान करने में सक्षम बनाते है। कुछ महत्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार है:-

- ई–सूचना स्त्रोत को शीघ्रता से खोजा जा सकता है।
- एक से अधिक उपयोगकर्ताओं द्वारा सूचना स्रोत तक पहुंच प्राप्त करना ।
- इन संसाधनों को वृहद मात्रा में संग्रहित किया जा सकता है।
- डिजिटल रूप में सूचना एकत्र करना, संग्रहित करना, तथा व्यवस्थित करना।
- सभी स्तर के उपयोगकर्ताओं को आर्थिक रूप से सूचना के कुशल वितरण को बढ़ावा देना।
- अनुसंधान संसाधनो एवम् कम्प्यूटिंग और संचार नेटवर्क में निवेश को बचाने और साझा करने के लिए सहकारी प्रयासों को प्रोत्साहित करने के लिए । आदि

ई–सूचना स्त्रोतों के प्रकार :–

- **ई–बुक्सः**–ई–किताबें प्राइम टाइम के लिए प्रतिस्पर्धा करनेवाले कई प्रारूप है, जिसमे एडोब पीडीएफ ,माइक्रोसॉफ्ट रीडर ,ई–रीडर, मोबी पॉकेट रीडर, ईपीयूबी, किंडल और आई पैड आदि शामिल है ।
- **ई–पत्रिकाएं:**–ई–पत्रिकाएं प्रत्येक पुस्तकालय संग्रह का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है। ई–पत्रिकाएं सूचना प्रोद्योगिकी का एक अनुपप्रयोग है।
- **ई–समाचार पत्र :**–एक ई–अखबार को ऑनलाइन समाचार या वेब समाचार पत्र के रूप में भी जाना जाता है।जो वर्ल्ड वाइड वेब या इंटरनेट पर मौजूद होता है ।

Scanned with CamScanner

•**अनुक्रमणिकरण एवम् सारकरण डेटाबेस :**–यह संदर्भ स्त्रोत है जो जर्नल्स सहित लेखों के सार के बारे में ग्रंथ सूची प्रदान करते है।

• **पूर्ण पाठ डाटाबेस:**–आज नेटवर्क पर कई डेटाबेस उपलब्ध हैं वे या तो मुफ्त है या शुल्क के साथ होते है ।

• **ई–डेटाबेस:**–ई–डेटाबेस, एक संगठित संग्रह है, ई–डेटाबेस की भीतर किसी विषय विशेष या बहुविषयक विषय क्षेत्र के बारे में जानकारी को इलेक्ट्रॉनिक रूप से खोजा और पुनरप्राप्त किया जा सकता है।

• **संदर्भ डेटाबेस:**–ये कई शब्दकोश, पंचांग और विश्वकोश है जो इंटरनेट पर इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में उपलब्ध है।

• **सांख्यिकीय डेटाबेस:**–इस डेटाबसे में संख्यात्मक डेटा होता है जो मास कम्युनिटी के लिए उपयोगी होती हैं।

• **छवि–संग्रह:**–ई–इमेज सुविधा के रोमांच के कारण इस प्रकार के डेटाबेस विकसित किए जाते है ।

• मल्टीमीडिया उत्पादन:–इस प्रकार के डेटाबेस में इमेजेस वीडियोज , ऑडियोज और टेक्स्ट्स आदि सम्मिनित होते है।

• **ई-थीसिस:**–इस डेटाबेस में ई प्रारूप के माध्यम से प्रकाशित पीएचडी थीसिस एवम् शोध प्रबंध सम्मिलित है।

• **ई-क्लिपिंग:**–ई-क्लिपिंग का मुख्य उद्देश्य पूर्व व्यापी खोज और नई आइटम्स का व्यापक विश्लेषण करना है ।

• **ई-पेटेंट:**–ई-पेंटेड सरकार द्वारा एक विशिष्ट अवधि के लिए एक आविष्कार का उपयोग करने का विशेष अधिकार है।

ई–सूचना स्त्रोतों की उपयोगिता:-

आज की 21 वी सदी में सूचना के विभिन्न स्त्रोत प्रिंट माध्यम से इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में बदल रहे है। कुछ ई–सूचना सेवाओ की संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं:-

- सामायिक चेतना सेवा – सी ए एस (CAS)
- चयनित सूचना प्रसार सेवा– एसडीआई (SDI)
- ई–दस्तावेज वितरण सेवाए-

ईडीडीएस

- ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस केटालॉग–ओपेक
- मोबाइल पुस्तकालय आदि

Scanned with CamScanner

ई-सूचना स्रोत के चयन का आधार:-

ई–सूचना स्रोत का चयन उपयोगकर्ताओं की आवश्यकता एवम् मांग के आधार पर करना चाहिए ,एक पुस्तकालयाध्यक्ष को इनके चयन के समय निम्नलिखित चरणो पर विचार करना चाहिए :-

- उपयोगकर्ताओं की आवश्यकता को ध्यान रखना।
- ई-सूचन स्त्रोत एवम उसके कंटेंट के क्षेत्र को जानना।
- ई-सूचना स्त्रोत की गुणवत्ता और उनमें खोज सुविधा की जांच करना ।
- लागत प्रभावशीलता बनाए रखना।
- खरीदते समय यह ध्यान रखना कि यह सदस्यता आधारित है या वेब आधारित।
- लाईसेंस कॉपी की जांच करना।
- शैक्षणिक सहायता और प्रशिक्षण का मूल्यांकन करना।
- संगतता और तकनीकी सहायता की जाँच करना।

ई - सूचना स्त्रोत की विशेषताएँ:-

* पाठ को खोजना आसान।
* किसी भी उपयोगकर्ता द्वारा कही से भी किसी भी दस्तावेज तक पहुँच आसान ।
* ई–सूचना स्त्रोत की पुनर्प्राप्ति प्रिंट–सूचना स्त्रोत की तुलना में तेज।
* उपयोगकर्ता को एक लिंक प्रदान करके दस्तावेज के लिए निर्देशित किया जा सकता है।
* इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में उपयोगकर्ता और पुस्तकालयाध्यक्ष के बीच बात चीत होती है ।
* किसी भी वर्ग या समूह का उपयोगकर्ता हो सकता है आदि ।

पुस्तकालय एवं सूचना सेवाओं पर ई-सूचना स्त्रोत का प्रभाव :—

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास और वेब वातावरण के प्रसार ने सूचना के उपयोग एवम् उपयोगकर्ता के व्यवहार पर एक नाटकीय प्रभाव डाला है | इन्टरनेट एवम् ई-सूचना स्त्रोत ने पुस्तकालय प्रणाली तथा साथ ही सूचना स्रोत को देखने के हमारे नजरिए को बदल दिया है। इसने सूचना स्त्रोत की जैसे–किताबों ,जर्नल्स और इलेक्ट्रॉनिक पब्लिकेशन की खरीदी को सरल एवम् त्वरित बना दिया है। अनेक पब्लिशर्स के कैटलॉग टूल्स जैसे–"बुक्स इन प्रिंट"तथा साथ ही साथ दस्तावेजो को ऑर्डर करने के लिए फार्म इन्टरनेट पर उपलब्ध हैं । पुस्तकालयाध्यक्षो को पुस्तको, पत्रिकाओं और इलेक्ट्रानिक प्रकाशनों तक त्वरित पहुँच की आवश्यकता होती है। प्रलेखो तक पहुंचने तथा प्रलेखीकरण को अद्यतम करने और सभी पुस्तकालयो की सूचना के इंटरफेस तक पहुंचने के लिए इन्टरनेट सरल और कुशल विधि है।

इन्टरलाइब्रेरी लोन (आई एल एल) के लिए अनुरोध ई-मेल के माध्यम से भेजा जा सकता है और, दस्तावेजों को स्कैन करने के बाद फोटोकॉपी डाक फैक्स द्वारा, ई मेल के माध्यम से भेजी जा सकती है। जैसे-जैसे पुस्तकालय इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों के वृहद संग्रह का निर्माण करते है, तो उनके कुशलतापूर्वक

Scanned with CamScanner

प्रबंधन के तरीके खोजना एक बड़ी चुनौती बन जाती है।अधिकांश पुस्तकालय द्वारा रखे गए इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं की संख्या, उद्धरण डेटाबेस, और पूर्व पाठ एकत्रिक्रण तेजी से बढ़े है हाल के दिनों में अधिकांश पुस्तकालय संसाधन जैसेकि , ई-जर्नल्स, ई–बुक्स डेटाबेस आदि इलेक्ट्रॉनिक प्रारूप में उपलब्ध कराए जा रहे है।

पुस्तकालय प्रिंट से ई की ओर बढ़ रहे हैं या तो व्यक्तिगत रूप से या कंसोटिया के माध्यम से सदस्यता लेकर इन संसाधनों को एक्सेस करना लाभ दायक होता है | हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि उपयोगकर्ता प्रिंट की तुलना में ई–सूचना स्त्रोत पसंद करते हैं।

ई–सूचना स्त्रोत की उपयोगिता :–

* ई–प्रकाशन कागज की तुलना में कम खर्चीला होता है ।

* ई–सूचना स्त्रोत किसी भी फाइल प्रारूप में जैसे टैक्स,ऑडियो ,वीडियो और छवियों के रूप में बनाए जाते है।

* उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफेस के कारण ई–संसाधन खोज आसान है ।

* ई सूचना स्त्रोत दिन के 24 घंटे उपलब्ध है और पुस्तकालय की जगह बचाते है।

* वे उपयोगकर्ताओं को तेज, अधिक सुविधाजनक और कभी भी घर से ,परिसर से या पुस्तकालय से पहुंच प्रदान करते है ।

* जिनके पास पुस्तकालयों तक पहुंच के लिए सीमित समय है, वे प्रभावी रूप से इन तक डायल अप प्रक्रिया द्वारा पहुंच सकते है।

ई सूचना स्त्रोत से संबंधित लायसेंसिंग मुद्दे:-

पुस्तकालय को ई–सूचना स्त्रोत को बनाने के लिए प्रकाशन से इसका उपयोग करने के लिए लाइसेंस की आवश्यकता होती है।

आईपीआर:–ई–सूचना स्त्रोत को आसानी से कॉपी किया जा सकता है, और दूसरे व्यक्ति को अग्रेशीत किया जा सकता है। इसके लिए आई पी आर को लेकर पुस्तकालयाध्यक्ष को सतर्क रहता चाहिए ।

मेटाडेटा के मानक:–मेटाडेटा विवरण के लिए मानक है जैसे मार्क 21 लेकिन बाजार में उपलब्ध ई–सूचना स्त्रोत का मार्क 21 द्वारा मानकीकरण नही किया जा रहा हैं।

कम बजट:–पुस्तकालय गैर लाभकारी संगठन है इसलिए वे महंगे इलेक्ट्रॉनिक-सूचना स्त्रोतों को खरीद नहीं सकते और वहन नहीं कर सकते हैं।

कुशल जनशक्ति :- इलेक्ट्रॉनिक संग्रह को संभालने के लिए कर्मचारी में उचित कौशल की आवश्यकता होती है। लेकिन पुस्तकालयों में कुशल जनशक्ति की कमी है।

बुनियादी ढांचे की कमी:-पुस्तकालय में ई - सूचना स्त्रोत के लिए सही बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है। और साथ ही संचार प्रौद्योगिकी घटक की भी आवश्यकता होती है ।

Scanned with CamScanner

निष्कर्ष :– आज के दौर में ई–सूचना स्रोत कितना महत्वपूर्ण है यह सभी को ज्ञात है। अतः इस सूचना स्त्रोत का क्रियान्वयन सदियों पुराने मानक "प्रत्येक पाठक को किसी भी समय सूचना मिलनी चाहिए" को ध्यान में रखते हुए इसके अनुरूप करना चाहिए। ई -सूचना स्त्रोत का उपयोग संपूर्ण एवं सटीक जानकारी सुनिश्चित करने में सहायक होते हैं। ई -सूचना स्त्रोत उपयोगकर्ता एवं पुस्तकालय प्रबंधन को विभिन्न खोज विकल्प प्रदान करते हैं। ई - सूचना स्रोत का उपयोग पुस्तकालय को पुस्तकालय के स्थान और उपयोगकर्ताओं के समय को बचाने में सक्षम बनाता है। ई - सूचना स्त्रोत पुस्तकालयो के साथ-साथ समाज के उन सभी उपयोगकर्ताओं को जो दुनिया के किसी भी कोने से विभिन्न प्रकार के सूचना को प्राप्त करना चाहते हैं इसके लिए सक्षम बनाता है । सूचना और संचार प्रौद्योगिकी सेवाओं में विकास ने वर्तमान में उपलब्ध पुस्तकालय संचालन कार्यों में आश्चर्यजनक परिवर्तन लाया है इसका लाभ यह हुआ है कि इलेक्ट्रॉनिक उत्पादों का उपयोग करने से उपयोगकर्ताओं का ज्ञान बढ़ा है।

संदर्भ सूची:–

इगबरोनगवे, हलीया सादिया (2011) द यूज एंड इम्पेक्ट ऑफ इलेक्ट्रानिक रिसोर्सेस एट द यूनिवर्सिटी ऑफ लोगोस।

कौर, एन. (2007) : ई-रिसोसेस ऍड कलेक्शन डेवलपमेंट : इमर्जिंग इश्यूस फार द अकादेमिक लाइब्रेरीज केलिबर 2007

शर्मा बी के : इनफॉरमेशन सोर्सेस, यूजर्स, सिस्टम, सर्विसेस एंड टेक्नॉलॉजी, वाई के पब्लिशर।

सिंह पंकज कुमार (2009) : यूज़र अवेयरनेस एंड यूज़ ऑफ ऑनलाइन जर्नल्स एट द जामिया मिल्लिया इस्लामिया लाइब्रेरी : अ सर्वे आइसलिक बुलेटिन 54 (4) 2009 I

वाई. केचाक्कनवर, आनंद (2014): टाइप्स ऑफ ई-रिसोर्सेस एंड इट्स यूटेलिटी इन लाइब्रेरी।

Scanned with CamScanner